अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

# जनजातीय वकास : समस्याएं एवं संभावनाएं
## (छत्तीसगढ़ पी.टी.जी. 'कमार' के वशेष संदर्भ में)

डॉ आई. पी. दिनकर
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र,
पंडत देवीप्रसाद चौबे शासकीय महावद्यालय , साजा जिला बेमेतरा छ. ग.

सार: यह शोधपत्र छत्तीसगढ़ में वशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTG) 'कमार' पर वशेष ध्यान देते हुए जनजातीय वकास के बहुआयामी पहलुओं की पड़ताल करता है। भारत के समग्र वकास में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, कमार समुदाय को कम साक्षरता दर और स्वास्थ्य सेवा तक सीमत पहुँच सहित सामाजिक-आर्थक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। औपनिवेशक वरासत और भू म अधग्रहण जैसे ऐतिहासक कारकों ने इन मुद्दों को और जटिल बना दिया है, जिससे सामाजिक-आर्थक असमानताएँ और सांस्कृतिक संरक्षण संबंधी चंताएँ पैदा हुई हैं। यह अध्ययन कमार समुदाय की वर्तमान स्थिति का वश्लेषण करने, सरकारी नीतियों का आकलन करने और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और पर्यावरण की दृष्टि से सही सतत वकास हस्तक्षेपों का प्रस्ताव करने के लए मश्रत -पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करता है।

कीवर्ड: जनजातीय वकास , छत्तीसगढ़, वशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह, कमार, सामाजिक-आर्थक चुनौतियाँ, सांस्कृतिक संरक्षण, सतत वकास।

### परिचय

भारत के वशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूहों (PVTG) में से एक कमार जनजाति, लचीलापन, परंपरा और अनुकूलन में एक आकर्षक अध्ययन है। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद, धमतरी, महासमुंद और कांकेर जिलों में मुख्य रूप से निवास करने वाली कमार जनजाति का समृद्ध इतिहास और जीवंत संस्कृति है जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है। कमार पारंपरिक रूप से लोहार या पैदल सैनिक होते हैं, एक ऐसा पेशा जिसने उनकी पहचान और जीवन शैली को आकार दिया है। लोहे के कृ ष औजार बनाने की कला उनके लए न केवल आजीवका का साधन है, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही एक सांस्कृतिक प्रथा भी है। लोहे को निहाई पर तालबद्ध तरीके से पीटना, धातु के आकार लेने पर चंगारियाँ उड़ना, भू म की खेती में सहायक औजार बनाने की संतुष्टि - ये सभी कमार पहचान के अभन्न अंग हैं। वे इन औजारों को स्थानीय बाजारों में बेचते हैं, स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं और अपने समुदायों को बनाए रखते हैं। हालाँक , कमार केवल लोहार नहीं हैं। उन्होंने वपरीत परिस्थितियों में साहस और वीरता दिखाते हुए पैदल सैनिकों के रूप में भी काम कया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

उनकी मार्शल परंपरा गर्व का स्रोत है और उनकी सांस्कृतिक कथा का एक अनिवार्य हिस्सा है। उनकी बहादुरी की कहानियाँ मौखक परंपराओं के माध्यम से आगे बढ़ाई जाती हैं, जो उनके इतिहास को जीवत रखती हैं। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक वरासत और समाज में योगदान के बावजूद, कमार जनजाति अनुसू चत जनजातियों में से एक है, जो क भारत सरकार द्वारा उन जनजातियों के लए वर्गीकरण है जो आर्थक रूप से अवकसत हैं। यह वर्गीकरण उनके सामने आने वाली सामाजिक-आर्थक चुनौतियों की एक कठोर याद दिलाता है। गुणवत्तापूर्ण शक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसरों तक पहुँच की कमी ने उनकी प्रगति में बाधा डाली है और उन्हें हाशए पर डाल दिया है। हालाँक, यह ध्यान रखना आवश्यक है क कमार जनजाति को अनुसू चत जनजाति के रूप में वर्गीकृत करने से उनके वकास के रास्ते भी खुलते हैं। भारत सरकार ने अनुसू चत जनजातियों के उत्थान के लए वभन्न योजनाओं और नीतियों को लागू कया है। इनमें शक्षा और रोजगार में आरक्षण, वत्तीय सहायता, आवास योजनाएँ और स्वास्थ्य सु वधाएँ शामल हैं। चुनौती इन योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने और यह सुनिश्चित करने में है क लाभ इच्छित लाभार्थयों तक पहुँचें। कमार जनजाति की कहानी वपरीत परिस्थितियों का सामना करने की दृढ़ता, तेजी से बदलती दुनिया में जीवत रहने के लए संघर्ष करने वाली एक समृद्ध सांस्कृतिक वरासत और परिवर्तन के कगार पर खड़े एक समुदाय की कहानी है। जैसे-जैसे हम उनके जीवन, उनके संघर्षों और उनकी आकांक्षाओं में गहराई से उतरते हैं, हमें भारत में आदिवासी वकास की जटिलताओं के बारे में जानकारी मलती है। हम समावेशी नीतियों की तत्काल आवश्यकता को समझते हैं जो उनकी सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करते हुए उन्हें वे अवसर प्रदान करें जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

अंत में, भारत के कई अन्य आदिवासी समुदायों की तरह कमार जनजाति भी एक चौराहे पर खड़ी है। वे जो रास्ता चुनते हैं, और सरकार और नागरिक समाज से उन्हें जो समर्थन मलता है, वह उनके भवष्य का निर्धारण करेगा। यह सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है क उनका भवष्य आशा, सम्मान और समृ द्ध से भरा हो। कमार जनजाति का वकास केवल आर्थक वकास के बारे में नहीं है; यह सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण और भारत के समान नागरिक के रूप में उनके अधकारों की पुष्टि के बारे में है। यह एक ऐसी यात्रा है जिसे हमें सहानुभूति, सम्मान और उनकी अनूठी चुनौतियों और आकांक्षाओं की गहरी समझ के साथ मलकर करना चाहिए।

उत्पत्ति और वतरण

भारत की समृद्ध जनजातीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कमार जनजाति की उत्पत्ति बस्तर से मानी जाती है, जो अपने घने जंगलों और ववध जनजातीय आबादी के लए जाना

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

जाता है। आज, यह जनजाति मुख्य रूप से रायपुर जिले के आसपास वतरित है, जो अपनी जीवंत संस्कृति और ऐतिहासक महत्व के लए जाना जाता है।

कमर जनजाति का वतरण एक क्षेत्र में केंद्रित नहीं है, बल्कि वभन्न गांवों में फैला हुआ है। यह फैलाव उनकी अनुकूलनशीलता और लचीलेपन का प्रमाण है। वे अक्सर अन्य जनजातीय समुदायों के साथ रहते हैं, जिससे एक अनूठी सांस्कृतिक मोज़ेक बनती है जहाँ वभन्न परंपराएँ, भाषाएँ और रीति-रिवाज़ एक साथ रहते हैं और एक-दूसरे को प्रभावत करते हैं।

कमर जनजाति की बस्तियाँ वशष्ट हैं और प्रकृति के साथ उनके घनिष्ठ संबंध को दर्शाती हैं। उनके घर, अक्सर बिखरी हुई झोपड़याँ, आसपास के परिदृश्य के साथ सहज रूप से घुल मल जाती हैं। उनकी बस्तियों का कोई निश्चित पैटर्न नहीं है, जो एक ऐसे समाज को दर्शाता है जो कठोर संरचना पर व्यक्तित्व और स्वतंत्रता को महत्व देता है।

उनके गाँवों का स्थान पर्यावरण के साथ उनके गहरे संबंध को भी दर्शाता है। बड़े गाँव अक्सर तलहटी के पास या जंगलों में गहरे बसे होते हैं। ये स्थान उन्हें अपनी आजीवका के लए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं, जैसे क उनके लोहार के काम के लए लकड़ी और खेती के लए उपजाऊ भू म। जंगल उनके भोजन, दवा और घरों के लए सामग्री के स्रोत के रूप में भी काम करता है। दूसरी ओर, कमर जनजाति की छोटी बस्तियाँ आमतौर पर सड़कों के कनारे पाई जाती हैं। ये बस्तियाँ उन्हें अन्य समुदायों के साथ बातचीत करने, व्यापार में संलग्न होने और व्यापक दुनिया से जुड़े रहने की अनुमति देती हैं। आधुनिकीकरण की चुनौतियों के बावजूद, ये सड़क कनारे की बस्तियाँ जनजाति की अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की क्षमता को दर्शाती हैं।

हालांक, यह बिखरा हुआ वतरण चुनौतियां भी पेश करता है। इससे कमार जनजाति को शक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करना मुश्किल हो जाता है। उनके गांवों का दूरस्थ स्थान, साथ ही बुनियादी ढांचे की कमी, अक्सर उन्हें अलग-थलग कर देती है। इस अलगाव का उनके सामाजिक-आर्थक वकास और अवसरों तक पहुँच पर प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष के तौर पर, कमार जनजाति की उत्पत्ति और वतरण उनके अनोखे जीवन के तरीके के बारे में जानकारी देते हैं। उनकी बस्तियाँ प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव, उनकी अनुकूलनशीलता और चुनौतियों का सामना करने की उनकी तन्यकता को दर्शाती हैं। हालाँक, यह समावेशी वकास नीतियों की आवश्यकता को भी रेखांकत करता है जो उनकी अनूठी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हैं और अवसरों और सेवाओं तक उनकी पहुँच सुनिश्चित

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

करते हैं। जैसा क हम कमार जनजाति के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने और उनका समाधान करने का प्रयास करते हैं, हमें उनकी सांस्कृतिक वरासत , पर्यावरण के साथ उनके संबंध और बेहतर भवष्य की उनकी आकांक्षाओं का सम्मान करना चाहिए। उनके सामाजिक-आर्थक वकास की यात्रा केवल सेवाएँ प्रदान करने के बारे में नहीं है; यह आधुनिक दुनिया के अवसरों को अपनाते हुए उन्हें अपने जीवन के तरीके को संरक्षत करने के लए सशक्त बनाने के बारे में है।

कमार जनजाति में साक्षरता दर

भारत में एक महत्वपूर्ण आदिवासी समुदाय कमार जनजाति का एक अनूठा सामाजिक-सांस्कृतिक ताना-बाना है जो परंपरा, लचीलापन और अनुकूलनशीलता के धागों से बुना हुआ है। हालाँक , एक पहलू जो सबसे अलग है और जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है, वह है जनजाति के बीच साक्षरता दर। कमार जनजाति में साक्षरता दर 23.96% है। यह आँकड़ा, राष्ट्रीय औसत की तुलना में कम प्रतीत होता है, लेकन चुनौतियों का सामना करने के बावजूद शक्षा को अपनाने के जनजाति के प्रयासों का प्रमाण है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है क इस संदर्भ में साक्षरता केवल पढ़ने और लखने के बारे में नहीं है। यह अलग-अलग संदर्भों से जुड़ी मुद्रित और लखत सामग्री को समझने, व्याख्या करने, बनाने, संवाद करने, गणना करने और उपयोग करने की क्षमता के बारे में है। दिलचस्प बात यह है क कमार आबादी का 4.13% हिस्सा अपना नाम लख सकता है। यह क्षमता, हालांक बुनियादी प्रतीत होती है, साक्षरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सीखने की यात्रा में पहला कदम है, कागज पर कसी व्यक्ति की पहचान का पहला निशान है। यह आत्म-पहचान और आत्म-अभव्यक्ति का प्रतीक है। औपचारिक शक्षा की बात करें तो, लगभग 40.49% कमार आबादी ने प्राथमक वद्यालय तक शक्षा प्राप्त की है। यह आँकड़ा जनजाति के बच्चों को पढ़ने, लखने और अंकगणत के बुनियादी कौशल प्रदान करने के प्रयासों को दर्शाता है। ये कौशल ही उन्हें दुनिया को समझने, सू चत निर्णय लेने और अपने समुदाय के वकास में योगदान देने में सक्षम बनाएंगे। इसके अलावा, कमार आबादी के 31.48% ने मडल स्कूल पास कर लया है। यह उपलब्धि उल्लेखनीय है क्योंक यह प्राथमक स्तर से परे शक्षा के लए जनजाति की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह व्यक्तिगत वकास , सामाजिक गतिशीलता और आर्थक समृ द्ध में शक्षा के महत्व के बारे में उनकी समझ को दर्शाता है। अंत में, कमार आबादी के 4.13% ने हाई स्कूल की शक्षा पूरी की है। हालाँक यह आँकड़ा छोटा लग सकता है, लेकन यह आशा की करण है। यह जनजाति की बेहतर भवष्य की आकांक्षाओं को दर्शाता है, एक ऐसा भवष्य जहाँ शक्षा एक महत्वपूर्ण भू मका निभाती है। हालाँक , ये आँकड़े शक्षा के मामले में कमार जनजाति के सामने आने वाली चुनौतियों को भी उजागर करते हैं। कम साक्षरता दर और हाई स्कूल स्नातकों का कम प्रतिशत गुणवत्तापूर्ण शक्षा तक पहुँच

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

की कमी, सामाजिक-आर्थक बाधाओं और सांस्कृतिक बाधाओं जैसे मुद्दों की ओर इशारा करता है। निष्कर्ष में, कमार जनजाति के बीच साक्षरता दर एक मश्रत तस्वीर पेश करती है। एक ओर, वे जनजाति की लचीलापन और शक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। दूसरी ओर, वे जनजाति की शैक्षक प्रगति में बाधा डालने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लए ठोस प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकत करते हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है क कमार जनजाति, सभी समुदायों की तरह, गुणवत्तापूर्ण शक्षा तक पहुँच प्राप्त करे जो उनकी सांस्कृतिक वरासत का सम्मान करती है और उन्हें 21वीं सदी में आवश्यक कौशल से लैस करती है।

छत्तीसगढ़ में जनजातीय वकास के लए चुनौतियाँ

छत्तीसगढ़ में कमार जनजाति सहित जनजातीय समुदाय कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं जो उनके वकास और प्रगति में बाधा डालती हैं। ये चुनौतियाँ वभन्न आयामों में फैली हुई हैं, जिनमें सामाजिक-आर्थक असमानताएँ, भू म अधकार मुद्दे, सांस्कृतिक संरक्षण संबंधी चंताएँ और राजनीतिक प्रतिनिधत्व में कमी शामल है।

सामाजिक-आर्थक असमानताएँ: जनजातीय समुदाय अक्सर महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थक असमानताओं से जूझते हैं। उनके पास गुणवत्तापूर्ण शक्षा और कौशल तक पहुँच नहीं है, जो उन्हें लाभकारी रोजगार हासल करने और अपनी आर्थक स्थिति में सुधार करने की क्षमता में बाधा डालता है। पौष्टिक भोजन तक अपर्याप्त पहुँच के कारण कुपोषण व्याप्त है, जिससे उनके स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे और भी गंभीर हो गए हैं। आश्रय और स्वच्छ पानी तक अपर्याप्त पहुँच उनके रहने की स्थिति को जटिल बनाती है, जिससे वे बीमारियों और अन्य स्वास्थ्य जोखमों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

भू म अधकार मुद्दे: भू म केवल जनजातीय समुदायों के लए आजीवका का स्रोत नहीं है; यह उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना से भी आंतरिक रूप से जुड़ी हुई है। हालाँक, उन्हें अक्सर भू म अधकारों से संबंधत मुद्दों का सामना करना पड़ता है। औपनिवेशक वरासत और भू म अधग्रहण जैसे ऐतिहासक और सामाजिक-राजनीतिक कारकों के परिणामस्वरूप कई जनजातीय समुदायों को अपनी पुश्तैनी ज़मीनें खोनी पड़ी हैं। संसाधनों और परिसंपत्तियों पर नियंत्रण की कमी ने उन्हें और भी हाशए पर धकेल दिया है, जिससे वे गरीबी और अभाव के चक्र में फंस गए हैं।

सांस्कृतिक संरक्षण की चंताएँ: जनजातीय समुदायों के पास समृद्ध और ववध सांस्कृतिक वरासतें हैं। हालाँक, उन्हें तेजी से हो रहे आधुनिकीकरण और वकास हस्तक्षेपों के कारण अपनी संस्कृति को संरक्षत करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

उनकी भाषाएँ, कला रूप, पारंपरिक ज्ञान और प्रथाएँ लुप्त होने का खतरा है। इससे न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान खत्म होती है, बल्कि दुनिया उनके अद्वतीय सांस्कृतिक योगदान से भी वंचत हो जाती है।

राजनीतिक प्रतिनिधत्व कम: आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होने के बावजूद, जनजातीय समुदायों को अक्सर राजनीतिक स्थानों में कम प्रतिनिधत्व दिया जाता है। यह कम प्रतिनिधत्व उनकी नीतियों और निर्णयों को प्रभावत करने की क्षमता को सीमत करता है जो सीधे उनके जीवन को प्रभावत करते हैं। यह उनके अधकारों और हितों की प्रभावी ढंग से वकालत करने की उनकी क्षमता में भी बाधा डालता है।

ये चुनौतियाँ जटिल और आपस में जुड़ी हुई हैं, जिन्हें संबोधत करने के लए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सरकारी नीतियों और वकास हस्तक्षेपों को जनजातीय समुदायों की अनूठी जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। उन्हें उनकी सांस्कृतिक वरासत का सम्मान और संरक्षण करते हुए उन्हें सामाजिक, आर्थक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने का लक्ष्य रखना चाहिए। निष्कर्ष रूप में, कमार जनजाति सहित छत्तीसगढ़ में आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना उनके वकास और प्रगति के लए महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र में समावेशी और सतत वकास प्राप्त करने के लए भी आवश्यक है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, यह याद रखना महत्वपूर्ण है क आदिवासी वकास केवल सेवाएँ और सु वधाएँ प्रदान करने के बारे में नहीं है; यह उनके अधकारों को पहचानने और उनका सम्मान करने, उनकी सांस्कृतिक वरासत को संरक्षत करने और उन्हें अपना भवष्य बनाने के लए सशक्त बनाने के बारे में है।

छत्तीसगढ़ में आदिवासी वकास के अवसर

चुनौतियों के बावजूद, छत्तीसगढ़ में आदिवासी वकास के लए कई अवसर हैं। ये अवसर राज्य की अनूठी ताकत और संसाधनों का लाभ उठाते हैं ताक सतत वकास को बढ़ावा दिया जा सके और आदिवासी समुदायों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कया जा सके।

जैव ववधता और कृ ष्जलवायु क्षेत्रों का लाभ उठाना: छत्तीसगढ़ की समृद्ध जैव ववधता और ववध कृ ष्जलवायु क्षेत्र आदिवासी वकास के लए एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं। आदिवासी बहुल दक्षणी क्षेत्र अपने प्राकृतिक संसाधनों का लाभ उठाकर व वधतापूर्ा और लचीली फसलें उगा सकता है। यह दृष्टिकोण न केवल एक टिकाऊ उत्पादन प्रणाली सुनिश्चित करता है बल्कि हर घर की पोषण संबंधी जरूरतों का भी ख्याल रखता है। यह

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देता है और जलवायु परिवर्तन और अन्य पर्यावरणीय चुनौतियों के लए आदिवासी समुदायों की लचीलापन बढ़ाता है।

कृ ष कृ ष एक ऐसा प्रमुख क्षेत्र है जहाँ आदिवासी समुदाय महत्वपूर्ण अवसर पा सकते हैं। सही समर्थन और संसाधनों के साथ, वे स्थायी कृ ष पद्धतियों को अपना सकते हैं, अपनी फसलों में ववधता ला सकते हैं और अपनी पैदावार में सुधार कर सकते हैं। इससे उनकी आय और आजीवका सुरक्षा बढ़ सकती है। हर्बल उत्पाद: राज्य की समृद्ध जैव ववधता हर्बल उत्पादों के उत्पादन में भी अवसर प्रदान करती है। आदिवासी समुदायों के पास औषधीय पौधों और उनके उपयोगों के बारे में पारंपरिक ज्ञान का खजाना है। इस ज्ञान का लाभ दवाओं से लेकर सौंदर्य प्रसाधनों तक कई तरह के हर्बल उत्पाद वकसत करने में उठाया जा सकता है। इससे उनके लए नए बाजार और आय के स्रोत खुल सकते हैं। पर्यटन: छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक वरासत और प्राकृतिक सुंदरता पर्यटन में महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। आदिवासी समुदाय इको-टूरिज्म और सांस्कृतिक पर्यटन पहलों में शामल हो सकते हैं। इससे न केवल आय उत्पन्न हो सकती है बल्कि उनकी सांस्कृतिक वरासत को संरक्षत करने और उनके अद्वतीय कला रूपों को बढ़ावा देने में भी मदद मल सकती है। हस्तशल्प व्यवसाय: छत्तीसगढ़ में आदिवासी समुदाय अपने अनूठे हस्तशल्प के लए जाने जाते हैं। इन हस्तशल्पों की घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अच्छी मांग है। सही समर्थन के साथ, आदिवासी कारीगर अपने व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं, व्यापक बाजारों तक पहुँच सकते हैं और अपनी आय में सुधार कर सकते हैं। वन उत्पाद उद्यमता: वन आदिवासी समुदायों के जीवन में महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। वे भोजन से लेकर उनके हस्तशल्प के लए सामग्री तक कई तरह के संसाधन प्रदान करते हैं। वन उत्पाद उद्यम वकसत करने के लए आदिवासी समुदायों का समर्थन कया जा सकता है। यह उन्हें एक स्थायी आय स्रोत प्रदान कर सकता है और साथ ही वन संसाधनों के सतत उपयोग को भी बढ़ावा दे सकता है।

निष्कर्षतः, छत्तीसगढ़ में आदिवासी वकास के लए कई अवसर हैं। हालाँक, इन अवसरों को साकार करने के लए एक सहायक नीतिगत माहौल, संसाधनों तक पहुँच और आदिवासी समुदायों की क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है क ये वकास पहल सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और समावेशी हों, आदिवासी समुदायों के अधकारों और आकांक्षाओं का सम्मान करें।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में कमार जनजाति और अन्य आदिवासी समुदायों का वकास वास्तव में एक जटिल मुद्दा है जिसके लए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। आदिवासी समुदाय, अपनी अनूठी संस्कृति, परंपराओं और प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंधों के साथ, राज्य के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

सामाजिक ताने-बाने का एक अभिन्न अंग हैं। उनका वकास केवल उनकी सामाजिक-आर्थक स्थिति में सुधार के बारे में नहीं है, बल्कि उनकी अनूठी सांस्कृतिक वरासत को संरक्षत करने और राज्य की प्रगति में उनकी सक्रय भागीदारी सुनिश्चित करने के बारे में भी है।

इन समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना और उनके वकास के अवसरों का लाभ उठाना राज्य के समग्र वकास के लए महत्वपूर्ण है। राज्य की समृद्ध जैव ववधता , ववध कृ षजलवायु क्षेत्र और सांस्कृतिक वरासत आदिवासी वकास के लए कई अवसर प्रदान करते हैं। इनमें टिकाऊ कृ ष हर्बल उत्पाद, पर्यटन, हस्तशल्प व्यवसाय और वन उत्पाद उद्यमता शामल हैं। हालांक , इन अवसरों को साकार करने के लए सरकार, गैर-सरकारी संगठनों और स्वयं आदिवासी समुदायों सहित सभी हितधारकों के ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है क आदिवासी समुदाय प्रगति के मार्ग में पीछे न छूट जाएं। इसके लए समावेशी नीतियों और कार्यक्रमों की आवश्यकता है जो उनकी वशष्ट आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को ध्यान में रखें। इसके लए उनकी क्षमताओं का निर्माण करने और उन्हें उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने के लए सशक्त बनाने के प्रयासों की भी आवश्यकता है। इसमें उन्हें शक्षा , स्वास्थ्य सेवा और अन्य बुनियादी सेवाओं तक पहुंच प्रदान करना, साथ ही कौशल और उद्यम वकसत करने के लए समर्थन देना शामल है। साथ ही, उनकी अनूठी संस्कृति और परंपराओं का सम्मान और संरक्षण करना महत्वपूर्ण है। इसमें उनके पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं को मान्यता देना, उनकी सांस्कृतिक अभव्यक्तियों का समर्थन करना और उनकी भू म और संसाधनों पर उनके अधकारों को सुनिश्चित करना शामल है। इसमें सामाजिक सद्भाव और आपसी सम्मान को बढ़ावा देने के लए अंतर-सांस्कृतिक संवाद और समझ को बढ़ावा देना भी शामल है।

अंत में, छत्तीसगढ़ में कमार जनजाति और अन्य आदिवासी समुदायों का वकास न केवल सामाजिक न्याय का मामला है, बल्कि राज्य के सतत वकास के लए भी एक शर्त है। यह एक ऐसी यात्रा है जिसके लए सहानुभूति, सम्मान और साझेदारी की आवश्यकता है। यह एक ऐसी यात्रा है जिसे हमें सभी के लाभ के लए एक साथ मलकर करना चाहिए।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 03, (July-Sep 2023)

संदर्भ

1. कुमार, आर., और संह , एल. (2023)। कमार जनजाति में शक्षा और सशक्तिकरण। मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, 11(2), 134-145। doi:10.1353/ant.2023.0038
2. कुर्रे, एस. के., और प्रधान, ए. (2014)। जनजातीय वकास : समस्याएँ और संभावनाएँ (छत्तीसगढ़ पीटीजी 'कामार' के वशेष संदर्भ में)। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट सोशयोलॉजी एंड ह्यूमैनिटीज, 5(8), 91-101। doi:6
3. लाल, बी. एस. (2014)। भारत में जनजातीय वकास : कुछ अवलोकन। सीरियल्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. (2023)। छत्तीसगढ़ के जनजातीय समुदाय: प्रमुख चुनौतियों की पहचान और समाधान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालटिकल रिव्यूज़, 23, 2531.
5. कुर्रे, एस. के., और प्रधान, ए. (2014)। आदिवासी वकास : समस्याएँ और संभावनाएँ (छत्तीसगढ़ पीटीजी 'कमर' के वशेष संदर्भ में)। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट सोशयोलॉजी एंड ह्यूमैनिटीज़, 5(8), 91-101. doi:1
6. लाल, बी. एस. (2014)। भारत में आदिवासी वकास : कुछ अवलोकन। सीरियल्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
7. (2023)। छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय: प्रमुख चुनौतियों की पहचान और समाधान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालटिकल रिव्यूज़, 23, 2531।